IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 4, March 2024

भारतीय ज्ञान परम्परा में कृषि विकास की पुरातन अवधारणा

डॉ. एस. एस. गौतम
प्राध्यापक (संस्कृत)
ssgautam1967@gmail.com
शासकीय छत्रसाल महाविद्यालय पिछोर, जिला शिवपुरी (म. प्र.)

शोध आलेख का सार– "वेद" भारत ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व मानव समाज के ज्ञान-विज्ञान के रूप में स्थापित होते जा रहे हैं। मानव जीवन के संचालन के लिए भोजन की महत्ती आवश्यकता होती है जिसकी आपूर्ति कृषि कार्य से ही सम्भव है कृषि न केवल जीविकोपार्जन का साधन है बल्कि अर्थव्यवस्था का भी महत्वपूर्ण स्त्रोत भी है। भारत को कृषि प्रधान देश माना जाता है यहाँ की अर्थव्यवस्था का एक बड़ा भाग कृषि पर ही आधारित है। भारत में प्राचीन काल से कृषि के महत्त्व को स्वीकार किया गया है। वैदिक अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि ही था। कृषि से उत्पन्न अन्न आजीविका का मुख्य साधन था। अतैव वैदिक युग में इसकी गुणवत्ता पर विशेष ध्यान दिया गया। सृष्टि की उत्पत्ति के साथ ही अन्न की समस्या उत्पन्न हुई इसके निवारण के लिए कृषि विद्या का अविष्कार हुआ। ऋग्वेद और अथर्ववेद से ज्ञात होता है कि कवि (मेधावी, दूरदर्शी) और धीर (विद्वान) मनुष्य कृषि कार्य अपनाते थे-

सीरा युञ्जन्ति कवयो....धीरा. । 1

कृषि कार्य गौरव का कार्य था अत: इन्द्र और पूसा (पूसन्) देवों को उसमें लगाया गया था-

इन्द्र: सीतां नि गृह्णातु तां पूषा.। 2

अश्विनी देवों द्वारा सर्वप्रथम जौ की खेती करने का वर्णन ऋग्वेद में प्राप्त होता है-

भव कृकेणाश्विनापन्ते
से दुहन्ता मनुषाम् दस्त्रा
अभि दस्युं वकुरेणा घमन्तो
रूज्योतिश्रृक मुराथार्थ। 3

सन्दर्भ –

(1) ऋग्वेद- 10.101.4 अथर्ववेद 3.17.1
(2) अथर्ववेद- 3.17.4
(3) ऋग्वेद- 1.117.21
(4) अथर्ववेद 6-116-1
(5) अथर्ववेद 20-76-4
(6) यजुर्वेद 9-22
(7) शत पथ ब्राह्मण 1-6-1-3

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 4, March 2024

(8) ऋग्वेद 10-28-08

(9) वेदों में समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र और शिक्षा पृ. 108

(10) ऋग्वेद 8-9-10

(11) अथर्ववेद 8-10-24

(12) अथर्ववेद 6-30-1

(13) ऋग्वेद 1-110-5

(14) ऋग्वेद 8-91-5

(15) ऐत. ब्रा 35.3

(16) अथर्ववेद 2-8-5

(17) यजुर्वेद 16-18

(18) अथर्ववेद 2-12-1

(19) अथर्ववेद 6-30-1

(20) ऋग्वेद 10-32-7

(21) ऋग्वेद 1-127-6

(22) यजुर्वेद 16-33-42 और 43

(23) यजुर्वेद 16-38

(24) यजुर्वेद 18-18

(25) अथर्ववेद 3-17-3

(26) अथर्ववेद 3-17-4

(27) अथर्ववेद 3-17-5

(28) अथर्ववेद 3-17-8

(29) अथर्ववेद 2-8-4

(30) अथर्ववेद 3-17-6

(31) अथर्ववेद 3-17-6

(32) अथर्ववेद 15-2-7

(33) अथर्ववेद 6-91-1

(34) काठक संहिता 15-2

(35) अथर्ववेद 3-14-3

(36) अथर्ववेद 19-31-3

(37) ऋग्वेद 3-8-7

(38) अथर्ववेद 7-11-01

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in
DOI: 10.48175/568
ISSN 2581-9429 IJARSCT

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 4, March 2024

(39) अथर्ववेद 7-18-2

(40) अथर्ववेद 6-50-1

(41) अथर्ववेद 6-50-3

(42) छान्दोग्य उपनिषद्

(43) ऋग्वेद 10-68-1

(44) वेदों में समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र और शिक्षाशास्त्र- पृ. 118

(45) अथर्ववेद 4-15-12

(46) ऋग्वेद 7-49-2

(47) वेदों में समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र और शिक्षाशास्त्र- पृ. 120